दादा भगवान परिवार का

मई २०१८

शुल्क प्रति नकल : ₹ 20/-

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

मज़ा करो, भाई मज़ा करो... वेकेशन में मज़ा करो...
"मई" महीने का तो सभी बेताबी से इंतज़ार करते हैं, सही न?
अ... हं... परीक्षा की नहीं, बल्कि परीक्षा के बाद के वेकेशन की!
लो! अब आ गया वेकेशन! मज़े लूटो!
और वेकेशन के साथ-साथ हम भी आ गए, आपके लिए वेकेशन का मज़ेदार अंक लेकर।
तो मित्रों, हल्के फूल जैसा यह अंक पढ़ो और वेकेशन का मज़ा उठाओ!!

- डिम्पल मेहता

छुट्टियों...का... मज़ा...

वर्ष : ६ अंक: २
अखंड क्रमांक: ६२
मई २०१८

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...
दान किसलिए?

प्रश्नकर्ता : दान किसलिए दिया जाता है?

दादाश्री : ऐसा है न, वह दान देकर खुद पाना चाहते हैं। सुख देकर सुख पाना चाहते हैं। मोक्ष के हेतु से दान नहीं देते। यदि लोगों को सुख दोगे तो आपको सुख मिलेगा। जो आप दोगे वही आपको मिलेगा। अतः यह तो नियम है। यह तो देने से ही हमें मिलता है, प्राप्त होता है। छीन लेने से फिर चला जाता है।

प्रश्नकर्ता : उपवास करना श्रेष्ठ है या दान देना?

दादाश्री : दान देना मतलब कि खेत में बीज बोना। खेत में बीज बो दिया इसलिए उसका फल आएगा। और उपवास करने से अंदर की जागृति बढ़ेगी। लेकिन शक्ति के अनुसार उपवास करना ऐसा भगवान ने कहा है।

दान का मतलब ही है सुख देना!

दान अर्थात् किसी भी जीव को, मनुष्य हो या अन्य कोई प्राणी हो उन्हें सुख देना। उसे दान कहते हैं। सभी को सुख दिया तो उसके "रिएक्शन" में तुरंत ही हमें घर बैठे सुख मिलेगा।

आप दान देते हो तो आपको अंदर सुख का अनुभव होता है। अपने खुद के रुपए दिए फिर भी सुख लगता है क्योंकि अच्छा काम किया। जब अच्छा काम करते हैं तो सुख मिलता है और जब बुरा काम करते हैं तब दुःख होता है। इससे हमें पता चलता है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा?

आशीर्वाद

स्वामी विवेकानंद अमरीका जाने वाले थे। जाने से पहले वे अपनी माता शारदा देवी से आशीर्वाद लेने गए। उन्होंने कहा, "मैं अमरीका जा रहा हूँ, मुझे आशीर्वाद दीजिए।"

माता के पैर छूए लेकिन माता ने आशीर्वाद नहीं दिए और चुपचाप खड़ी रहीं। स्वामी जी ने फिर से आशीर्वाद माँगा, फिर भी वे मौन रहीं। बहुत देर बाद माता ने स्वामी जी से रुम में रखी हुई छुरी लाने के लिए कहा। स्वामी जी छुरी तो ले आए लेकिन आशीर्वाद के साथ उसका क्या संबंध है यह उन्हें समझ में नहीं आया। छुरी मिलते ही माता ने आशीर्वाद दिए।

स्वामी जी ने चकित होकर इस बारे में पूछा, तो माता ने बताया, "बेटा, मैंने जब छुरी माँगी, तब तुमने उसकी नोक अपने हाथ में पकड़ी और उसका दूसरा छोर मेरे हाथ में दिया। इससे मैं समझ गई कि तुम तमाम विवादास्पद विषय अपने तक रखकर लोगों का तो भला ही करोगे। चाहे खुद को ज़हर पीना पड़े लेकिन लोगों को तो अमृत ही बाँटोगे। इसलिए मैं तुम्हें दिल से आशीर्वाद देती हूँ।"

यह सुनकर स्वामी जी ने कहा, "लेकिन मैं ऐसा नहीं सोचता। मैंने तो यह सोचकर छुरी की नोक अपनी ओर रखी कि आपको चोट न लग जाए।"

तब माता जी ने और भी अधिक प्रसन्न होकर कहा, "यह तो और भी अच्छी बात है। तुम्हारे स्वभाव में ही भलाई है। तुम कभी भी किसी का बुरा नहीं करोगे। जा मेरा आशीर्वाद हमेशा तेरे साथ है।"

और सचमुच स्वामी विवेकानंद का समग्र जीवन औरों की भलाई में ही व्यतीत हुआ।

इनाम नहीं, सज़ा दो !

गोपाल कृष्ण गोखले हमारे देश के एक बहुत बड़े नेता हो चूके हैं। उनके बचपन की एक बात है।

एक दिन उनके शिक्षक ने उन्हें शाबाशी देते हुए कहा, "तुमने सभी प्रश्नों के सही जवाब लिखे हैं। इसलिए लो, मैं तुम्हें यह पुस्तक इनाम में देता हूँ।"

लेकिन आश्चर्य की बात तो यह हुई कि यह सुनकर गोपाल खुश होने के बजाय रोने लगे। बेचारे शिक्षक स्तब्ध रह गए।

गोपाल रोते हुए, धीरे से बोले : "गुरुजी, आप मुझे इनाम नहीं, सज़ा दीजिए।"

"सज़ा क्यों बेटा?" शिक्षक को कुछ समझ में नहीं आया।

"बात यह है कि इसमें से एक सवाल मुझे नहीं आता था। उसका जवाब अपने एक दोस्त की मदद से लिखा है। इसलिए मुझे यह इनाम लेने का अधिकार नहीं है।" गोपाल ने निखालसता से कहा।

शिक्षक यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। गोपाल की पीठ थपथपाकर उन्होंने कहा : "बेटा, पहले यह इनाम मैं तुम्हारी बुद्धि के लिए दे रहा था, अब बुद्धि के साथ-साथ तुम्हारी सच्चाई के लिए, तुम्हारी ईमानदारी के लिए भी दे रहा हूँ। लो! इसी तरह हमेशा सच बोलना। भगवान तुम्हारा भला करे।"

ऐसी सच्चाई और ईमानदारी की वजह से ही गोपाल बड़े होकर महान बन पाए।

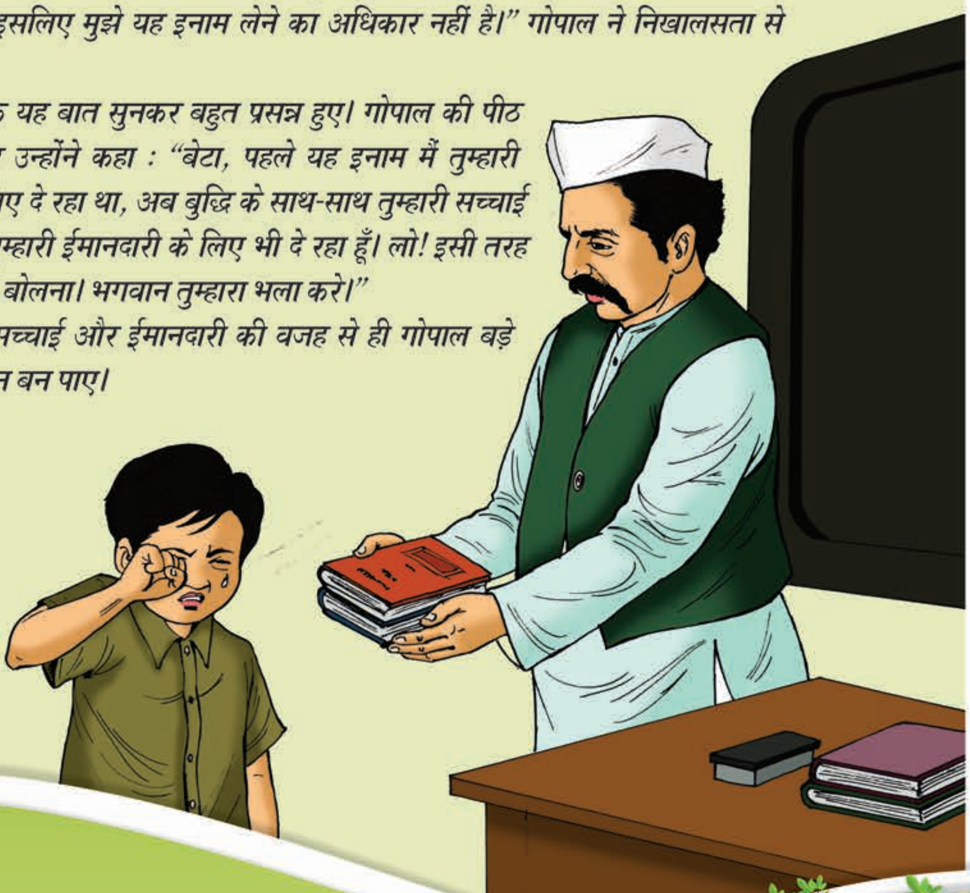

यह तो नई

ज्ञानीपुरुष के १००८ गुण होते हैं। उनमें मुख्य चार गुण जो किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकें ऐसे भी होते हैं।

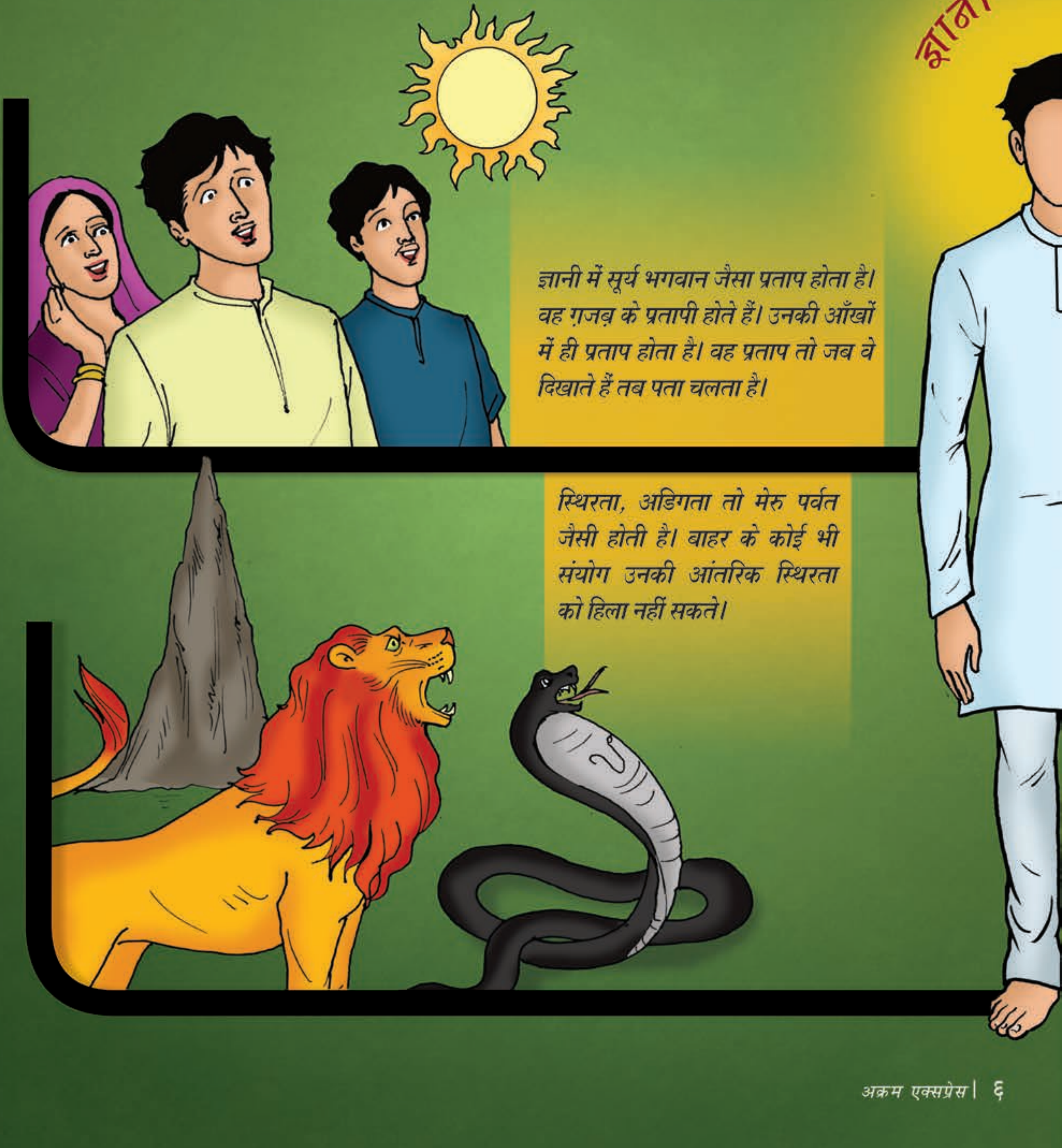

ही बात !

चंद्रमा जैसी सौम्यता होती है। ऐसी सौम्यता होती है कि उनकी ठंड़क के कारण सभी महात्माओं को ज्ञानी के पास से हटने का मन नहीं होता। उनकी सौम्यता तो सूर्य की गरमी को भी पिघला दे ऐसी होती है। कोई चाहे कितना भी गुस्से में आया हो लेकिन ज्ञानी की आँखों में सौम्यता देखते ही शांत हो जाता है। प्रताप और सौम्यता, ये दोनों गुण, एक साथ सिर्फ ज्ञानी में ही हो सकते हैं। वर्ना कईयों में सिर्फ प्रताप होता है सौम्यता नहीं होती है और जिनमें सौम्यता होती है उनमें प्रताप नहीं होता। यथार्थ ज्ञानी के एक आँख में प्रताप और एक आँख में सौम्यता होती है।

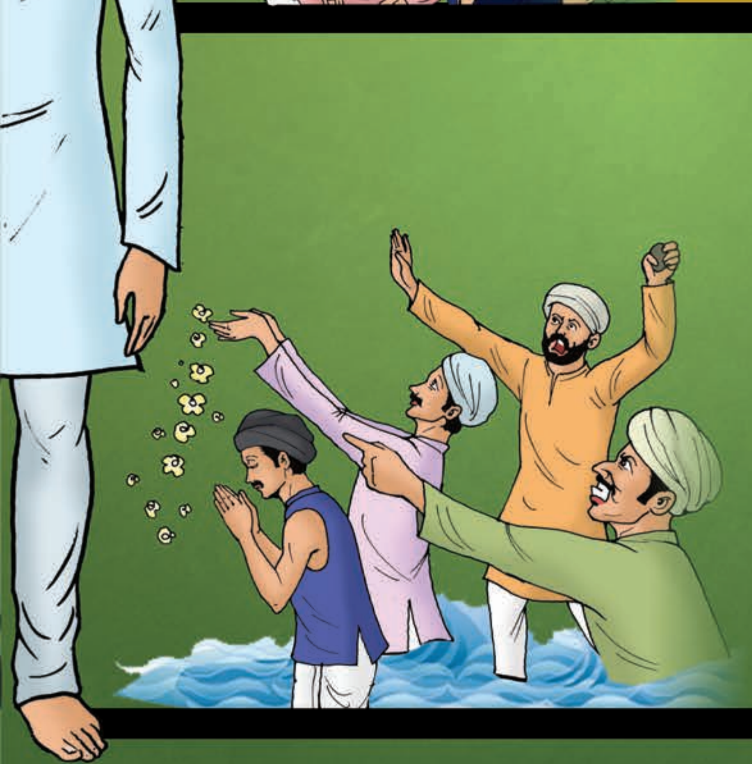

सागर जैसी गंभीरता होती है। कोई जो भी देता है, उसे समा लेते हैं और ऊपर से आशीर्वाद भी देते हैं।

सफलता का रहस्य

दो किसान थे। एक का नाम कानजी भाई और दूसरे का नाम रघु भाई। कानजी भाई के घर की आर्थिक स्थिति बाप दादा के समय से ही अच्छी थी। उनके बाप दादा बहुत सारी ज़मीन छोड़कर गए थे।

रघु भाई का परिवार गरीब था। विरासत में एक छोटा सा खेत ही मिला था। लेकिन रघु भाई उद्यमी और समझदार थे। सालभर सख्त मेहनत करते तब मुश्किल से घर चलता था। रघु भाई की पत्नी रमा बहन भी समझदार थीं, मेहनती थीं। घर की परिस्थिति समझती थीं। इसलिए वह प्रेम से घर का करभार संभालती थीं। जो भी मिलता उसी में ही खाना-पीना चला लेते थे। घर बहुत ही कम खर्च में चलाती थीं। उनका घरसंसार सुखी था।

रघु भाई भी सुबह जल्दी उठ जाते थे। सारा काम निपटाकर खेत पर जाते थे। उनके पास बैलों की जोड़ी नहीं थी। इसलिए जब खेत जोतना होता, तब कानजी भाई के वहाँ से बैलों की जोड़ी किराए पर ले आते।

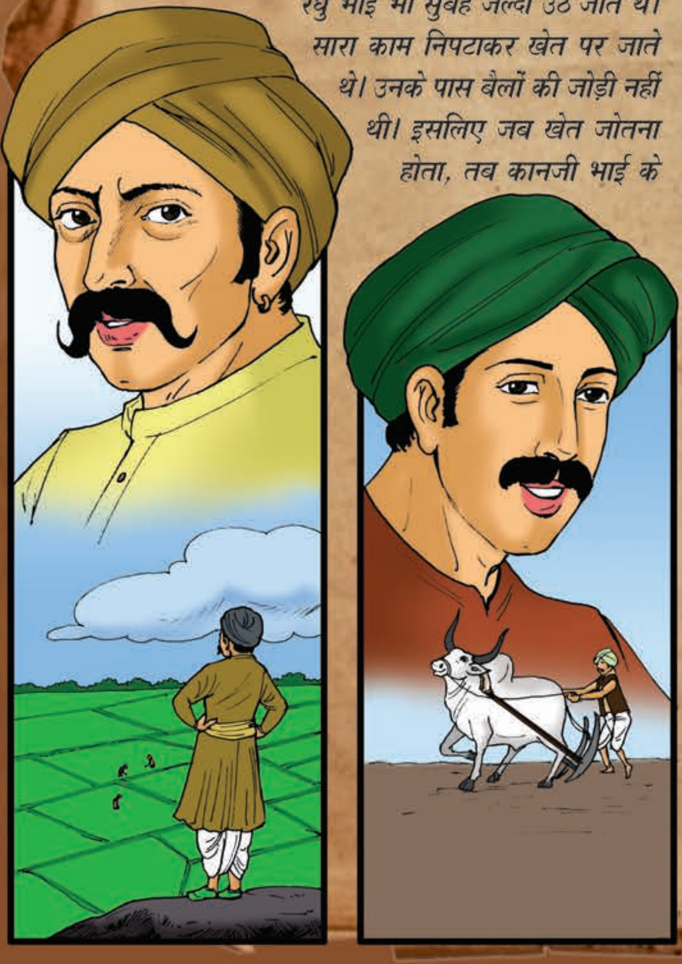

कानजी भाई के खेत फैले हुए थे। कानजी भाई की आर्थिक स्थिति अच्छी थी, इसलिए उन्हें कमाने की कुछ पड़ी नहीं थी। कभी-कभी गाड़ी में बैठकर खेत पर चक्कर लगा आते थे। सुबह कानजी भाई अपने सभी मज़दूरों को इकट्ठा करते। सभी को अलग-अलग खेत का काम सौंपते। फिर वे रौब से कहते, "जाओ! खेत में अच्छी तरह से काम करना। आलस मत करना। बीड़ी फूँकने मत बैठ जाना। गाँव की गपशप मत करना। कामचोरी मत करना।"

सभी मज़दूर फावड़ा, कुदाली, हँसिया, हल आदि औज़ार लेकर खेत में जाते। उसके बाद कानजी भाई मज़े से चाय-नाश्ता करते। फिर बरामदे में खटिए पर हुक्का गुड़गुड़ाते बैठे रहते।

जब बीज बोने होते या कटाई करनी होती तब रघु भाई को भी मज़दूरों के पास काम करवाना पड़ता था। रघु भाई मज़दूरों को इकट्ठा करते। फिर हाथ में हँसिया लेकर वे कहते, "चलो भाईओं! हम खेत पर चलते हैं।"

रघु भाई मज़दूरों के साथ शाम तक खेत पर खूब काम करते थे। उन्हें काम करते हुए देखकर सभी मज़दूर भी अच्छी तरह से काम करते थे।

एक-दो साल में रघु भाई ने बैल की एक अच्छी जोड़ी खरीद ली। एक गाय भी घर पर बाँध ली। पास वाला खेत बिकाऊ था। रघु भाई ने वह खेत खरीद लिया। सुबह-शाम पति-पत्नी सख्त मेहनत करते। सुविधा होने पर, रघु भाई ने पक्का घर भी बँधवा लिया।

दूसरी ओर दिन-ब-दिन कानजी भाई के हालात बिगड़ने लगे। खेत में फसल कम होने लगी। कानजी भाई की तबियत बिगड़ने लगी। ज़रा सा काम करते, तो हाँफने लगते।

जबकि रघु भाई तो राम का नाम लेकर हँसते-हँसते उठते। दूध और ताज़ी-ताज़ी रोटी खाकर बैल की जोड़ी और हल लेकर उल्लास के साथ खेत में जाने के लिए निकल पड़ते।

एक दिन कानजी भाई खटिए में लेटे हुए सोचने लगे, "पहले तो रघु के पास छोटा सा खेत था। वह बहुत गरीब था। मैं उसकी समय-समय पर मदद करता था।

लेकिन मैं देख रहा हूँ कि कुछ ही सालों में रघु की स्थिति बहुत सुधर गई है। उसने दो, तीन खेत खरीद लिए हैं। बैलों की जोड़ी भी खरीद ली है। गाय भी ले ली है। घर भी पक्का बनवा लिया। यह सब हुआ कैसे? रघु और रमा सारा दिन कितने आनंद में गुज़ारते हैं!

और मेरे यहाँ देखो! कितने सारे खेत हैं, ढ़ेर सारा पैसा है। अनाज भी जितना चाहिए उतना भरा पड़ा है। काम करने वाले नौकर-चाकर भी हैं। लेकिन कुछ ठीकठाक नहीं है! मेरी तबियत भी कैसी हो गई है! और मेरी पत्नी की तबियत भी बिगड़ती रहती है। ऐसा क्यों हुआ होगा?

एक दिन कानजी भाई से रहा नहीं गया। हाथ में लकड़ी लेकर वे धीरे-धीरे रघु भाई के घर जा पहुँचे। अचानक कानजी भाई को अपने घर आते हुए देखकर रघु भाई को बहुत आश्चर्य हुआ! वे दौड़ते-दौड़ते उनके पास गए। हाथ जोड़कर रघु भाई बोले, " राम राम! कानजी भाई, राम राम! आइए! आइए!"

रघु भाई ने कानजी भाई का हाथ पकड़कर प्रेम से खटिए पर बिठाया। रमा बहन भी दौड़कर बाहर आ गई। ठंडा पानी ले आई।

रघु भाई ने रमा बहन से कहा, "सुनो, कानजी भाई के लिए गरमा गरम दूध बनाकर ले आओ।"

कुछ इधर-उधर की बातें करने के बाद कानजी भाई ने अपने मन की उलझन बताई।

रघु भाई गंभीरता से बोले, कानजी भाई, यह सब दो शब्दों का प्रताप है। "जाओ और चलो।" आप अपने मज़दूरों से "खेत पर जाओ" ऐसा कहते हो। जबकि मैं अपने मज़दूरों से "खेत पर चलो" ऐसा कहता हूँ। आप सारा काम मज़दूरों पर छोड़ देते हो। जबकि मैं मज़दूरों के साथ काम करता हूँ। मुझे काम करता देखकर मज़दूर भी मन लगाकर काम करने लगते हैं। इसलिए मेरा सारा काम अच्छी तरह से और तय किए हुए समय में पूरा हो जाता है। मेरी देखरेख की वजह से फ़सल की भी अच्छी तरह देखभाल होती है। कानजी भाई "यही मेरी सफलता का रहस्य है।"

कानजी भाई, रघु भाई का आभार मानते हुए गद्‌गद् होकर बोले "रघु भाई, आपका बहुत धन्यवाद। अब मुझे सही ज्ञान हुआ है। आज तक मैं खेती का सारा काम मज़दूरों पर छोड़ देता था। मैं श्रीमान आलसी की तरह घर में खटिए पर पड़ा रहता था! इससे मुझे दुगना नुकसान हुआ है। मेरी खेती की आमदनी एकदम कम हो गई और मेरी तबियत भी बिगड़ गई! रघु भाई आज से मैं भी खेत पर जाने लगूँगा।"

ऐसा कहकर कानजी भाई उत्साहपूर्वक अपने घर पर गए और नए जीवन की शुरुआत की।

कुदरत का नियम है... "उपयोग करो या गँवा दो।"

हम अपनी शक्तियों का उपयोग करेंगे तो वह ज़रूर बढ़ती जाएँगी। और यदि उनका उपयोग नहीं करेंगे तो हम अपनी शक्तियों को गँवा देंगे।

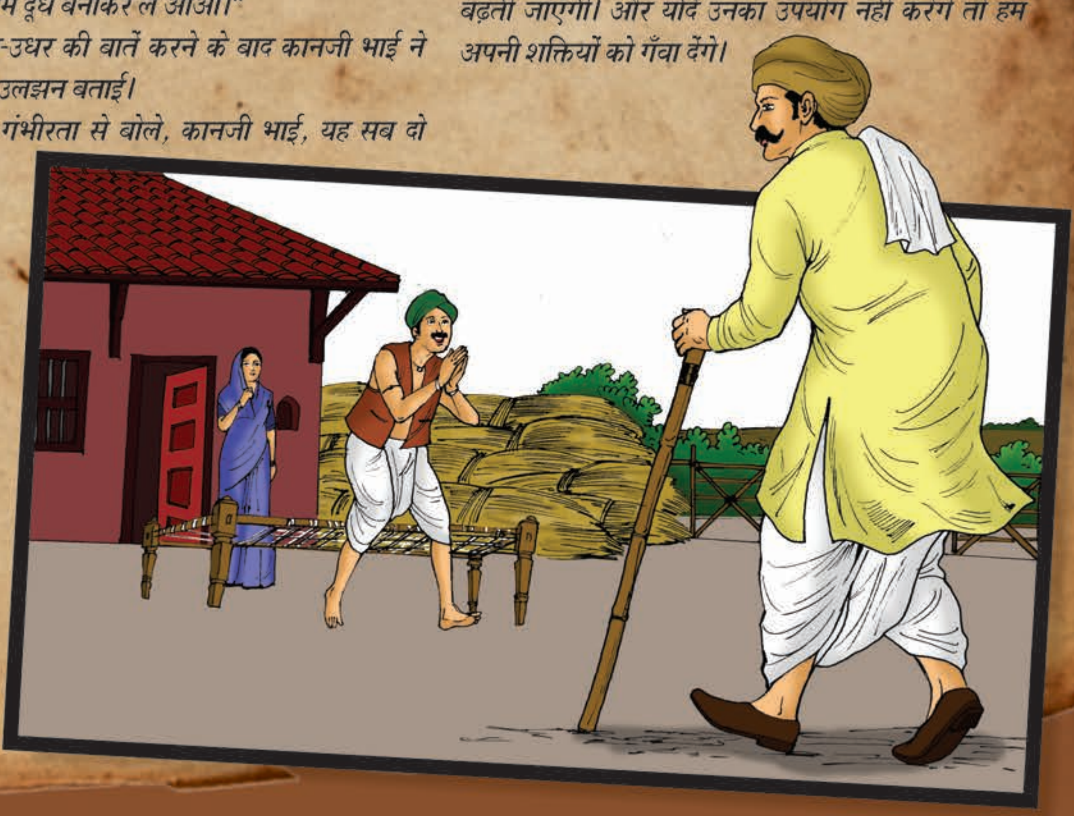

चलो खेलें....

१) नीचे दी हुई पहली को सुलझाइए।

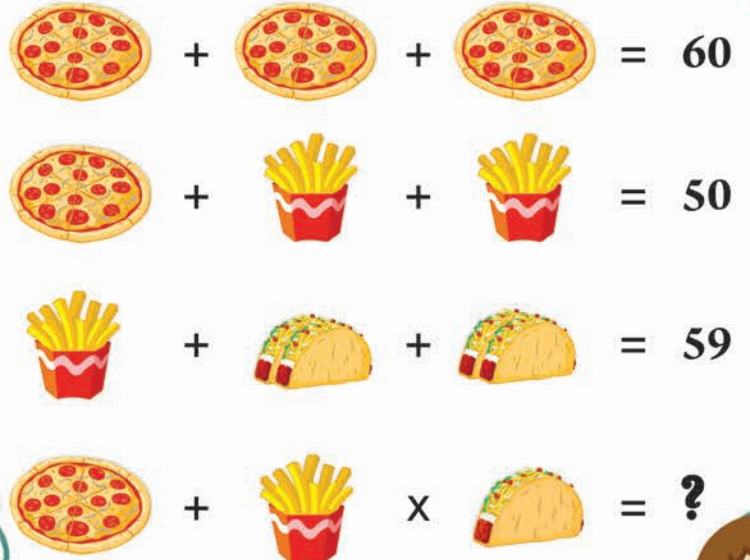

२) क्या आप मदद कर सकते हो?
नक्ष को पानी के झरने तक
पहुँचाने में?

JJ 111 Updates Corner

कैसे हो दोस्तों!

JJ 111 के अपडेट कॉर्नर में आपका स्वागत है। इस बार हम आपके लिए समुद्र के उस पार से न्यूज़ ले आए हैं। क्या आप जानते हो कि हमारे प्रिय पूज्यश्री ने लंदन, यू.के. में पोन्टीस शिविर के दौरान, इस्टर के दिन इस साल की जन्म जयंती के लॉगो का उद्घाटन किया।

इन्टरनेशनल JJ 111 के भव्य महोत्सव की शुभारंभ यू.के. की शिविर में किया गया! क्या आप सभी ने JJ 111 का लॉगो देखा है? यह वास्तव में एकदम अलग ही है, कुछ डिफरन्ट ही है!

JJ 111 वास्तव में "एक देखने जैसी दुनिया" होगी! एक ऐसी दुनिया जिसमें ३ से १९ साल के सभी बच्चों के लिए GNC थीम पार्क होगा।

जिसमें अक्रम विज्ञान से संबंधित विभिन्न प्रकार की मनोरंजक प्रवृत्तियाँ जैसे कि पपेट शो, मल्टी मीडिया शो, थीम पर आधारित प्रदर्शनी, आउट डॉर फन ज़ोन, स्टॉरी टेलिंग एक्टिविटी एरिया, सेल्फी ज़ोन, गेम्स और लकी ड्रॉ जैसे अनेक प्रदर्शनों द्वारा दिखाया जाएगा। इसके अलावा, बच्चों के लिए बुक ज़ोन एरिया भी होगा जहाँ उन्हें " टेल्स ऑफ ओरीग्ज़" के आगे के चार भाग भी दिखाए जाएँगे। जिसकी हम सभी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं।

यू.के. में JJ 111 महोत्सव का शुभारंभ एक शानदार और मज़ेदार एक्टिविटी के साथ किया गया। इस अवसर पर वहाँ एक नाटक भी प्रस्तुत किया गया, जिसका नाम था "देखने जैसी दुनिया"!

तो चलिए, फोटो द्वारा उनके उत्साह और आनंद की झलक देखें।

तो यह थी अब तक की जानकारी। JJ 111 महोत्सव के अपडेट्स जानने के लिए अगला अंक देखना मत भूलना!

हमें पूरा विश्वास है कि इस नवम्बर में आप सीमंधर सिटी ज़रूर पधारोगे और आप खुद ही "देखने जैसी दुनिया" में आकर इस आनंद महोत्सव का लाभ उठाओगे।

तो अभी के लिए गुडबाय...

माइकल जॉर्डन

माइकल जॉर्डन का जन्म सन १९६३ में न्यूयॉर्क के ब्रुकलिन शहर की झोंपड़पट्टी में हुआ था। वे अफ्रीकन-अमेरीकन थे। वे बहुत गरीब थे। वे जहाँ रहते थे वहाँ रंगभेद बहुत था इसलिए उन्हें अपने भविष्य के लिए आशा की कोई किरण नहीं दिख रही थी।
१३ साल की उम्र में उनके पिता ने उन्हें एक उपयोग किया हुआ कपड़ा दिया।
तुम्हें क्या लगता है, इस कपड़े की कीमत क्या होगी?
"शायद एक डॉलर।"
क्या तुम इसे २ डॉलर में बेच सकते हो ?
मैं प्रयत्न करूँगा लेकिन मुझे सफलता मिलेगी उसकी कोई गारन्टी नहीं है।
जॉर्डन ने सावधानी से कपड़ा धोकर साफ किया। उस कपड़े की सिलवटे निकालने के लिए उसके पास इस्त्री नहीं थी इसलिए उन्होंने एक सपाट बोर्ड पर कपड़े के ब्रश की मदद से अच्छी तरह से सिलवटें निकाली और फिर उसे सूरज की धूप में सुखाने रख दिया।

दूसरे दिन वे उस कपड़े को लेकर एक भीडभाड़ वाले स्टेशन पर जा पहुँचे। छः घंटे की मेहनत के बाद आखिर जॉर्डन उसे दो डॉलर में बेचने में सफल हुए। उस दिन से वे रोज़ उपयोग किए हुए कपड़े ढूँढते, धोते, प्रेस करते और फिर भीड़ में जाकर बेच देते।
दस दिन के बाद,
क्या अब तुम इस कपड़े को २० डॉलर में बेच सकोगे?
इस कपड़े के तो ज्यादा से ज्यादा २ डॉलर ही मिलेंगे।
तुम प्रयत्न करके तो देखो, कोई रास्ता ज़रूर मिलेगा।
आखिरकार जॉर्डन को एक उपाय सूझा। उन्होंने अपने चाचा जी के लड़के की मदद से उस कपड़े पर डोनाल्ड डक और मिकी माउस का चित्र पेइन्ट करवाया।
फिर उन्होंने एक स्कूल के पास उसे बेचने का प्रयत्न किया जहाँ पैसे वाले लोगों के बच्चे पढ़ने आते थे, और सचमुच एक लड़के ने उसे खरीद लिया।
घर पहुँचने पर उनके पिता ने उन्हें दूसरा उपयोग किया हुआ कपड़ा दिया।
क्या तुम इसे २०० डॉलर में बेचने की क्षमता रखते हो?
हाँ।

दो महीने के बाद पिक्चर की एक प्रसिद्ध हीरोइन फराह फोसेट, अपने पिक्चर के प्रमोशन के लिए न्यूयॉर्क आई थी। प्रेस कॉन्फरेन्स पूरी होने के बाद, जॉर्डन सिक्योरिटी फॉर्स को पार करके फराह फोसेट के पास पहुँच गए।
ऑटोग्राफ प्लीज़
श्योर।
फोसेट ने उस कपड़े पर अपने हस्ताक्षर कर दिए।
इस टी-शर्ट पर मिस फराह फोसेट ने साइन की है, इसकी कीमत २०० डॉलर है। मैं इसकी निलामी करने के लिए खड़ा हूँ।
४०० डॉलर
५०० डॉलर
७०० डॉलर
१००० डॉलर
१२०० डॉलर
जॉर्डन ने वह टी-शर्ट उस बिज़नेसमेन को १२०० डॉलर में बेच दी।

बेटा, मुझे बहुत खुशी है कि तुमने यह कर दिखाया। अब बताओ, "इन तीन कपड़ों को बेचने के अनुभव से तुमने सफलता के बारे में क्या सीखा?"
यदि आपका निश्चय अडिग है तो सफलता आपके हाथ में ही है।
दूसरा यह कि एक पुराना कपड़ा, जिसकी कीमत सिर्फ एक डॉलर ही है, उसकी भी कीमत बढ़ाई जा सकती है तो फिर हम तो जीवित और विचारशील इंसान हैं। भले ही हम काले और गरीब हैं लेकिन उससे क्या फर्क पड़ता है?
इस सोच ने युवान माइकल जॉर्डन को एक नया पाठ सिखाया। यदि एक उपयोग किए हुए कपड़े की गरिमा भी बढ़ाई जा सकती है तो मेरी क्यों नहीं? मैं अपने आप को छोटा क्यों समझूँ ?तब से जॉर्डन का भविष्य बदल गया।
हमारे भीतर इतनी उत्तम क्षमताएँ हैं, जिन्हें हमें पद, दिखावा या संपत्ति के आधार पर, कम या हल्का नहीं मानना चाहिए। अपने आप को सुधारने का प्रयत्न करते रहो और आगे बढ़ो।

मीठी यादें

9.

एक महात्मा बहन करीब़ आठ महीने से ऊणोदरी की सेवा में जुड़ी थीं। उस दौरान किसी की बात से उन्हें ज़बरदस्त बुरा लग गया और भोगवटा आया। अहंकार को इतनी ज्यादा ठेस लग गई थी कि पाँच दिन तक वह बात उनके दिमाग़ से निकल नहीं रही थी। इतना ही नहीं, उस बात का गुस्सा उन्होंने खुद पर उतारना शुरू कर दिया। खाना-पीना बंद कर दिया, कड़ी धूप में चप्पल पहनना बंद कर दिया।

इस बात का नीरू माँ को पता चला। क्या बात हो गई उसका पता नहीं था लेकिन वह बहन ऐसा कुछ कर रहीं हैं ऐसा उनकी समझ में आया।

३१ दिसम्बर की रात थी। सभी मंदिर में भक्ति के लिए इकट्ठे हो रहे थे। वह बहन भी मंदिर में पहुँची। वे भगवान के दर्शन करते-करते रो रही थीं। तभी नीरू माँ आ गए।

उस बहन को पता नहीं था कि नीरू माँ आ गए हैं। नीरू माँ ने दूर से देखा तो उन्हें पता चल गया कि वह बहन रो रहीं हैं। जैसे ही वह बहन दर्शन करके मूड़ी कि सामने नीरू माँ को खड़ा पाया।

तब नीरू माँ ने उस बहन को बड़े प्रेम से गले लगाया और कहा, "चुप हो जा।" और उनकी पीठ सहलाते रहे।

दोनों के बीच कोई बातचीत नहीं। नीरू माँ उन्हें सिर्फ सहलाते रहे। और उस बहन का भोगवटा जैसे गायब ही हो गया। अंदर का सारा तूफ़ान थम गया, कुछ भी कहे बिना।

आज भी, हर ३१ दिसम्बर को उस बहन को नीरू माँ के साथ का प्रसंग ज़रूर याद आ जाता है।

ऐसा था नीरू माँ के मातृत्व का जादू!!

२.

पूज्यश्री रोज़ सुबह योगा करते हैं। ब्रह्मचारी भाई भी साथ में करते हैं। एक ब्रह्मचारी भाई, कुछ दिन के बाद, एक दिन दस मिनट देर से पहुँचे।

उनकी प्रकृति ऐसी थी कि उन्हें अपमान का भय रहता था, इसलिए पूज्यश्री के कुछ भी पूछने से पहले ही अपना पक्ष लेते हुए बोले, "रात को सोने में ज़रा देर हो गई इसलिए सुबह उठने में थोड़ी देर हो गई।"

पूज्यश्री ने पूछा, "यानी, वाचन, सामायिक, सत्संग ऐसा कुछ करने की वजह से देर हो गई?"

भाई ने जवाब दिया, "नहीं, पूज्यश्री, दो-तीन लोग बैठे थे। ज़रा बातचीत हो रही थी।"

पूज्यश्री ने फिर से पूछा, "मतलब ज्ञान रिलेटेड चर्चा हो रही थी?"

भाई ने कहा, "नहीं। थोड़े गप्पें मार रहे थे।"

तब पूज्यश्री संकेत देते हुए अत्यंत करूणा से बोले, "बाहर का कुसंग तो कोई कभी बता देगा, लेकिन यह कुसंग तो कौन बताएगा!"

इतना बोलकर वे तुरंत मौन हो गए।

लेकिन उनके अंतिम वाक्य से भाई का मंथन शुरू हो गया और उन्हें समझ में आ गया कि, ज्ञानी हमें आगे की सीढ़ियाँ चढ़ाना चाहते हैं। यहाँ आ गए मतलब पूर्णाहुति नहीं हो गई है। सेवा करते हैं वह एक साधन है। मूल साध्य नहीं।

हम रोज़ ऐसे व्यर्थ में ही कितना समय वेस्ट कर देते होंगे!

अहो! अहो! करूणा मूर्ति ज्ञानी!

संत गुरु नानक

एक बार घूमते-घूमते गुरु नानक बगदाद पहुँचे। उन्हें पता चला कि वहाँ का बादशाह बहुत ही लोभी और जुल्मी है। लोगों को दुःखी करके उसने बहुत सारा धन इकट्ठा किया था।

नानक ने महल के सामने ही अपना अड्डा जमा लिया और पूरे शहर में से कंकड़ बीनकर वहाँ ढेर लगाने लगे। जब लोग पूछते, "बाबा, यह क्या कर रहे हो?" तो नानक कहते, "यह तो मेरी और बादशाह की निजी बात है।" कुछ समय बाद बादशाह को इस बात का पता चला।

बादशाह को लगा, "यह फकीर मेरे लिए ज़रूर कोई छूपी बात लेकर आया है।" इसलिए एक दिन वह नानक से मिलने गया और पूछा, "बाबा, ये कंकड़ यहाँ क्यों इकट्ठे किए हैं?"

नानक ने कहा, "यह मेरी दौलत है, बादशाह।"

"दौलत? क्या करोगे इस दौलत का?" बादशाह ने हँसकर पूछा। बादशाह को फकीर पागल लगा।

नानक ने कहा, "मुझे यह दौलत आपके यहाँ गिरवी रखनी है। आप रखोगे न?"

बादशाह ने हँसकर कहा, "हाँ, रखूँगा। लेकिन फिर आप यह कब वापस ले जाओगे?"

नानक ने कहा, "मृत्यु के बाद जब हम खुदा के दरबार में मिलेंगे तब आपसे मैं माँग लूँगा।"

बादशाह कुछ क्षण के लिए नानक के सामने घूरते रहे। फिर वे बोले, "मृत्यु के बाद? वहाँ तो यह दौलत मैं किस तरह ला पाऊँगा? क्या आप इतना भी नहीं जानते कि इंसान खाली हाथ जन्म लेता है और खाली हाथ इस दुनिया को छोड़कर चला जाता है?"

नानक ने कहा, "आप यह जानते हो? मुझे तो लगा कि आप जो धन लोगों को दुःख देकर इकट्ठा कर रहे हो, वह धन मृत्यु के बाद साथ में लेकर जाने वाले हो। इसलिए मैंने विनती की कि आपके धन के साथ मेरा भी इतना थोड़ा सा धन लेते जाना। क्या आप, मृत्यु के बाद अपने साथ धन नहीं ले जाने वाले हो?"

बादशाह ने धीरे से कहा, "नहीं।"

नानक ने कहा, "तो फिर आपके धन में और मेरे धन में क्या फर्क है? वह भी कंकड़ ही है न।"

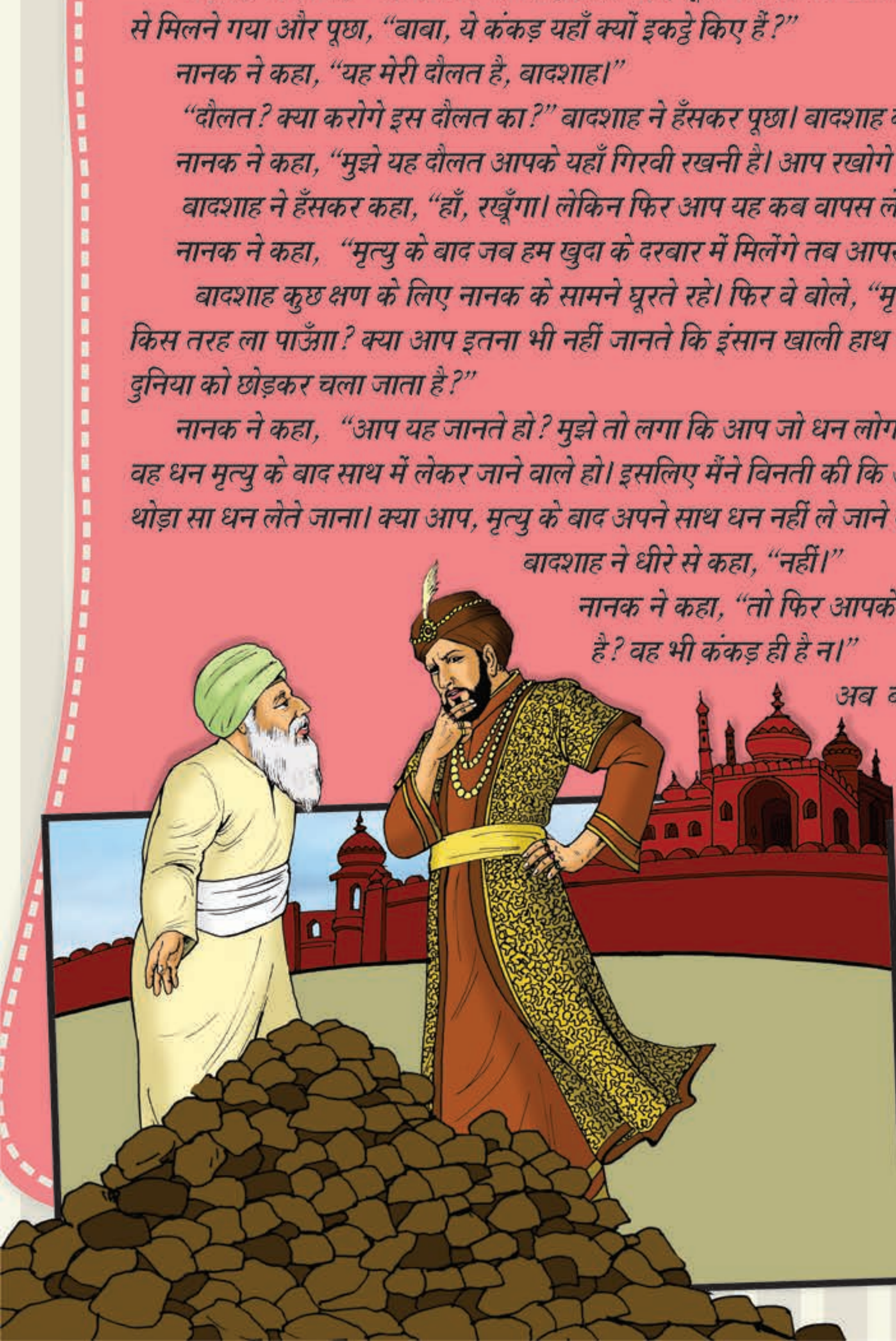

अब बादशाह को नानक के कहने का आशय समझ में आया। नानक के पैरों में गिरकर उसने दिल से माफी माँगी। इकट्ठा किया हुआ सारा धन उसने गरीबों को दान कर दिया और हल्का फूल हो गया।

इस प्रकार गुरु नानक ने कईयों के जीवन में परिवर्तन लाकर उन्हें सही मार्ग पर चढाया।

Summer Camp 2018

सीमंधर सिटी, सुरत, मुंबई और धोराजी में हुए समर कैम्प की झलक...

Dance

Activity

Enjoying Drama

Puzzle Game

Pujan

पज़ल के जवाब 1) 385

Akram Express

May 2018
Year : 6, Issue : 2
Conti. Issue No.: 62

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

Drawing

Craft

JJ 111 Invitation

Gift

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर SMS करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २. पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मेगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025